नव वर्ष का संकल्प

दत्तोपंत ठेंगडी

नव वर्ष का संकल्प

॥ श्री: ॥

मा० श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी का भाषण

दि. ११. ४. ९४ - नागपुर - वर्ष प्रतिपदा उत्सव

डॉक्टरजी के जन्मदिन के नाते नहीं, क्योंकि संघ में व्यक्ति पूजा नहीं है, उनके जीवन कार्य का स्मरण करने और आद्यसरसंघचालक जी को प्रणाम करने इस उत्सव को मनाया जाता है। इस अवसर पर अपनी विकल अवस्था में भी श्री बालासाहब उपस्थित हैं यह हमारा सौभाग्य है। श्री गुरूजी ने श्री बालासाहब का 'डॉक्टरजी की छोटी प्रतिकृति' ऐसा स्वयंसेवकों को परिचय कर दिया था इसका मुझे स्मरण होता है।

डॉक्टरजी जन्मजात देशभक्त थे। बचपन से ही समकालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और क्रान्तिकारी आदि सभी कार्यों में सहभागी होकर उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया था। कार्य करते समय उनका गहन चिन्तन भी चल रहा था। अनुशीलन समिती के एक नेता त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती ने कहा था कि यद्यपि 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' का जन्म १९२५ में हुआ, श्री केशवराव जी के मन में इस प्रकार का कार्य आवश्यक है यह विचार १९१६ में जब वे क्रान्ति कार्य के लिए बंगाल में थे, तभी मुझसे कहा था। वे कहते थे, राष्ट्रीय स्वाभिमान के कारण स्वराज्य प्राप्ति के लिये ये प्रयत्न उचित ही है, परंतु स्वराज मिलने पर सब कुछ ठीक होकर हमारे प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा इस विचार से मैं सहमत नहीं हूँ। मुझे लगता है कि जब तक इस देश के सामान्य नागरिक की राष्ट्रीय चेतना का स्तर ऊँचा होकर उनका संगठन नहीं होता, तब तक देश के भविष्य के विषय में आशा करना व्यर्थ है। अत: संघ स्थापना के पीछे डॉक्टरजी का कई वर्ष तक किया गया गहन चिंतन है। १९२५ में संघ आरंभ करते समय, चिंतन पूर्ण हो जाने के कारण डॉक्टरजी के मन में कार्य की पूरी योजना थी, परंतु वे उस समय अधिक बोले नहीं। कहा कि दक्ष आरम करो। अच्छी शाखा

चलाओ। वे उस समय पूरी संकल्पना कहते तो किसी को समझना भी कठिन था। जैसी जैसी संघ की शक्ति बढ़ती गई, एक-एक कदम समाज परिवर्तन की दिशा में संघ आगे बढ़ाता गया। आज जो संघ सृष्टी का विस्तार हम देख रहे हैं, कोई अकल्पित नहीं है। १९२५ में डॉक्टर जी के मन में जो Vision थी, उसकी यह क्रमश: अभिव्यक्ति (Progressive Unfoldment) हो रही है और आगे भी होती रहेगी। आज हो रहा यह आविष्कार या प्रकटीकरण उन्होंने पहले से ही सोचा हुआ था। जैसे हमारी समझदारी का स्तर बढ़ता जा रहा है, आविष्करण का एक-एक नया पहलू हमें दिखाई दे रहा है।

संघ प्रारंभ करते समय हमें डॉक्टर जी से साध्य-साधन विवेक प्राप्त हुआ। स्वराज्य यह तात्कालिक लक्ष्य है। यह "याचि देही याचि डोळा" पूर्ण होना चाहिये। परंतु अंतिम लक्ष्य है "परं वैभवं नेतुमेतत् स्व राष्ट्रम्।" इस लक्ष्य प्राप्ति के लिये "विधायास्य धर्मस्य संरक्षणम्" यह साधन है और "विजेत्री च न: संहता कार्य शक्तिर्" उस का आधार है। हिंदु संगठन, जो सबसे कठिन है, अपना आधारभूत कार्य है। हिन्दू संगठन का कार्य संघ करेगा। संपर्क, संस्कार और संस्कारित हिन्दुओं का, यानी स्वयंसेवकों का अनुशासन बद्ध संगठन का निर्माण कार्य संघ करेगा। और इस संगठन कार्य की सीमाएं और हिन्दुस्थान की सीमाएं एक रूप हो जाने तक कार्य वृद्धि करना। अर्थात पूर्ण हिन्दू समाजव्यापी संघ हो इस हद तक काम को बढ़ाना। मनोविज्ञान की दृष्टि से संघ संपूर्ण हिन्दू समाज के साथ एकात्म है यह अनुभूति होने तक कार्य दृष्टि हमें अपेक्षित है।

संघ इसी संगठन कार्य पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा। और संघ से प्रेरणा और संस्कार प्राप्त स्वयंसेवक राष्ट्र जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कर राष्ट्र पुनर्निर्माण कार्य में उपयुक्त अनेकविध कामों की रचना तथा उस क्षेत्र में वैचारिक विकास करेंगे। संघ के द्वारा स्वयंसेवकों का निर्माण और स्वयंसेवकों के द्वारा अन्यान्य क्षेत्र में कार्य का एवम् वैचारिक विकास, इस तरह का श्रम विभाजन डॉक्टर जी के द्वारा पहले से ही सोचा गया था। आज जो विभिन्न प्रकल्प दिखाई दे रहे हैं, वे उनकी संकल्पना का क्रमश: विकसन प्रकटन (Progressive Unfoldment) मात्र है।

संघ कार्य प्रंरभ करने के पश्चात् डॉक्टर जी ने स्वयं अपने स्वभाव में आश्चर्यकारक परिवर्तन किया। संघ स्थापना के पूर्व उनके भाषण शोले जैसे जोशीले और आवेश

पूर्ण होते थे। संघ का निर्माण होने के उपरान्त हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है, भगवा ध्वज राष्ट्रध्वज है, इस प्रकार 'दूध भात भिंडी की सब्जी' जैसे सौम्य, शब्दों का प्रयोग वे अपने भाषण में करने लगे। किन्तु हम जानते हैं कि उनके सामने एक Vision थी और उसे साकार करने का प्रयत्न, डॉक्टर जी का ऋषिऋण चुकाने में हम सब का कर्तव्य है।

उनकी Vision का स्वरूप स्पष्ट करने वाली संघ स्थापना के पूर्व की एक घटना का मुझे स्मरण होता है। १९२० में इंडियन नैशनल कांग्रेस का नागपुर में अधिवेशन था। डॉक्टर जी उसकी स्वागत समिति के सक्रिय सदस्य थे। डॉक्टर जी के आग्रह के कारण कांग्रेस अधिवेशन की विषय नियामक समिति के पास एक प्रस्ताव भेज कर उसे अधिवेशन में पारित किया जाना चाहिये ऐसा कहा गया था। प्रस्ताव में कहा गया था कि काँग्रेस ने निःसंदिग्ध शब्दों में अपना ध्येय घोषित करना चाहिये। यह ध्येय द्विविध हो। भारत को पूर्ण रूप से स्वतंत्र कर उसमें गणराज्य की (Republic State) स्थापना और विश्व के सभी देशों को पूंजीवाद के चंगुल से मुक्त करना। ऐसी स्पष्ट घोषणा नागपुर के अधिवेशन में करनी चाहिये। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक द्रष्टा के नाते डॉक्टरजी के क्या विचार थे, इसका बोध इस घटना से होता है।

आज खंडित भारत में क्यों न हो हम गणराज्य चला रहे हैं। डॉक्टर जी का स्वप्न अभी अधूरा है। विभाजित भारत पुन: संलग्न होकर जब गणराज्य की स्थापना होगी तब उनके स्वप्न की पूर्ति हुई है, ऐसा कहा जायेगा। एक स्वयंसेवक के नाते हमेशा हमारे सामने 'अखंड भारत' रहे। मन में नित्य जागृत रखने की यह बात है। दुनिया के इतिहास में इस प्रकार का सबसे अच्छा उदाहरण इजरायल का है। अपनी मातृभूमि में अपने राज्य और राष्ट्र की स्थापना करेंगे ऐसा उनका निश्चय था। हर साल एक-दूसरे से मिलते समय "अगले वर्ष जेरूसलम में" (Next year in Jerusalem) कह कर वे आपस में अभिवादन करते थे। यह क्रम १८०० वर्ष तक चलता रहा। उन्होंने आपना लक्ष्य छोड़ा नहीं और इसी कारण इजरायल की स्थापना हो सकी। भारत की तुलना में आयर्लेंड का मामला पुराना है। अपना लक्ष्य हृदय में दृढ़ता से धारण कर उनका काम चल रहा है। रोहिडेश्वर के शिवमंदिर में शिवाजी ने हिंदवी स्वराज्य स्थापना की प्रतिज्ञा ग्रहण करने के ११४ वर्ष के पश्चात् अटक पर भगवा ध्वज लहराया गया था। श्री गुरू

गोविंदसिंह जी के द्वारा शस्त्र धारण कर प्रतिकार और पंचप्यारों की घटना हमें याद है। उस समय कार्य प्रारंभ करने के १४० वर्षों के बाद अफगानिस्तान पर काबू करना सिखों को संभव हो सका था। एक ध्येय को दृढ़ता से मन में रखकर प्रयास करने पर लक्ष्य प्राप्ति होती है। हम एक दिन अखंड भारत का स्वप्न साकार करके ही रहेंगे, ऐसा हमें विश्वास है।

आज की स्थिति में प्रासंगिक और तात्कालिक अधिक महत्व रखने वाली एक और बात है। डॉक्टर जी ने १९२० में कहा था कि विश्व के सभी देशों को पूंजीवाद के चंगुल से मुक्त कराना चाहिये। यह आश्चर्यजनक इसलिये है क्योंकि अभी-अभी तक दुनिया के सब देश पूंजीवाद से प्रभावित होंगे ऐसी स्थिति नहीं थी। अभी तक समाजवाद, साम्यवाद आदि भिन्न-भिन्न विचार प्रणालियाँ लोग अपना रहे थे। किन्तु आगे चलकर संपूर्ण विश्वपर पूंजीवाद छा जायेगा इतना दूर का विचार एक द्रष्टा के नाते डॉक्टर जी ने उस समय किया था, जो इसी महिने में साकार होने वाला है। पूंजीवाद दुनिया पर छा रहा है।

डंकेल के बारे में बहुत चर्चा हुई है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधी सभा ने इस विषय पर प्रस्ताव पारित कर जनता का मार्गदर्शन किया है। संघर्ष का स्वरूप क्या है, हम समझें। यह नया संघर्ष है। १५ अगस्त, १९४७ को प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम समाप्त हुआ, जो राजनैतिक स्वातंत्र्य के लिये था। अब दूसरा स्वातंत्र्य संघर्ष शुरू हो रहा है, जो आर्थिक स्वातंत्र्य के लिये है। १९४७ तक जो संग्राम था वह राष्ट्रीय स्तर का, हम और साम्राज्यवादी ब्रिटिश सरकार के बीच था। आज का संघर्ष राष्ट्रीय स्तर का नहीं है। अब तो दुनिया में तीसरा जागतिक युद्ध छिड़ गया है। १९१४ का पहला और १९३९ का दूसरा, ये दो विश्व युद्ध सैनिक शस्त्रों से लड़े गये थे। यह तीसरा विश्व युद्ध आर्थिक शस्त्रों से लड़ा जा रहा है। संयोग की बात है कि सब विकसित गोरे देश उत्तर में स्थित हैं ओर गैर गोरे विकसनशील सब देश दक्षिण दिशा में है। इसीलिये उत्तरी देश और दक्षिणी देश यह नया शब्द प्रयोग प्रचलित हो गया है। यह आंतर्राष्ट्रीय, जागतिक विश्व युद्ध है। इस विश्वयुद्ध का एक हिस्सा यानी हमारा द्वितीय स्वातंत्र्य संग्राम है, यह हम ध्यान में रखें।

इस द्वितीय स्वातंत्र्य संग्राम का स्वरूप हमें समझ लेना चाहिये। इसके पक्ष में सरकारी दल, मास मीडिया, टी० वी० सहित सबका उपयोग हो रहा है। विरोधी लोग भी जागृत हो गये हैं। उनके द्वारा मजदूर, किसान, विद्यार्थी, लघु उद्योजक, बुद्धिजीवी (Intellectuals) आदि सभी ने प्रदर्शन करते हुए अपना निषेध प्रकट किया है। वामपंथीयों का ५ अप्रैल को और भाजपा के द्वारा ६ अप्रैल को किया गया प्रदर्शन प्रभावशाली रहा है। राजनीति निरपेक्ष और अन्य राजनीतिक दल, सभी ने इसका विरोध प्रकट किया है। सभी ने कहा है कि हमारे प्रधान मंत्री ने GATT समझौते पर हस्ताक्षर नहीं करना चाहिये। हम संघर्ष का स्वरूप समझ लें और आने वाली घटनाओं का स्वरूप ध्यान में रखें। प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए कहा गया कि हस्ताक्षर मत करो। सामूहिक मानसिकता में (Mass Psychology) प्रभावित करने वाले प्रदर्शन के उपरान्त भी हस्ताक्षर हो जाने से, अब क्या हो सकता है? अब तो यह (Fait Accomply) पत्थर पर की लकीर है, इस प्रकार की निराशा और विफलता की भावना जन मानस में निर्माण होती है। इस विषय में हमें सावधान रहना चाहिये।

हम कहते हैं और यही वस्तुस्थिति है कि नरसिंहरावजी ने एक बार तो क्या दस हजार बार हस्ताक्षर करने पर भी आने वाली अच्छी या बुरी परिस्थिति में फरक पड़ने वाला नहीं है, क्योंकि उनके हस्ताक्षर जनता पर नैतिक दृष्टि से और संवैधानिक दृष्टि से बंधनकारक नहीं हैं। पिछले जिस चुनाव के कारण कांग्रेस सरकार सत्ताधिष्ठित हुई है, उसमें GATT जैसे समझोते के विषय में क्या करना चाहिये यह चुनाव का मुद्दा नहीं था। मतदाताओं ने उन्हें स्वाक्षरी करने के लिये अधिकार या आदेश नहीं दिया है। प्रजातंत्र की चुनाव प्रक्रिया में जिस विषय का विचार नहीं हुआ है और अगला चुनाव होने में देर होने पर, जनमत संग्रह (रेफरेन्डम्) लिया जाता है। युरोपीयन इकॉनॉमिक कम्युनिटी में सहयोग करना या नहीं करना, यह चुनाव का विषय इंग्लैंड में नहीं था। परंतु इसका निर्णय करने की आवश्यकता होने से और अगला चुनाव देर से होने वाला था इसलिये इंग्लैंड में जनमत संग्रह (रेफरेन्डम्) लेकर लोगों का आदेश प्राप्त किया गया। भारत में न ही रेफरेन्डम् लिया और न लोकसभा को विश्वास में लिया गया है। इसी कारण प्रधानमंत्री को हस्ताक्षर करने का नैतिक अधिकार नहीं है।

सरकार के पास सारी सत्ता केंद्रित है। अत: प्रधानमंत्री के हस्ताक्षर हम पर बंधनकारक नहीं है, ऐसा आप कैसे कह सकते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में, वह बंधनकारी न होते हुए भी उसका परिणाम होगा। हस्ताक्षर करने से हमारी संप्रभुता समाप्त होती है। संवैधानिक सरकार के प्रतिनिधि के हस्ताक्षर हम पर बंधनकारक नहीं है ऐसा कहने मात्र से काम नहीं होगा। यदि जनजागरण हुआ होता तो यह प्रश्न ही नहीं पैदा होता। इस विषय में अमेरीका का उदाहरण उद्बोधक है। दूसरे महायुद्ध के पश्चात विजेता राष्ट्रों के प्रतिनिधी ‘व्हर्सांय’ में एकत्र हुए थे। वहाँ नई दुनिया की रचना की गई और ‘लीग ऑफ नेशन्स’ की स्थापना हुई थी। सब कार्य अमेरीका के प्रेसिडेंट विल्सन के नेतृत्व में किया गया। प्रेसिडेंट विल्सन की सज्जनता के कारण ब्रिटन के लॉइड जॉर्ज और फ्रान्स के क्लेमन्स ने चतुराई से विल्सन की विश्व के त्राता इस नाते प्रशंसा करने पर अगुआपन लेकर लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना और व्हर्सांय का समझौता विल्सन द्वारा संपन्न किया गया। विश्व के त्राता इस नाते सब देशों की राजधानी में उनका स्वागत भी जोर-शोर से हुआ। परंतु जयजयकार और सत्कार समारोह होते समय अमरीकी जनता का इस बारे में क्या विचार है इस बारे में सोचना विल्सन भूल गये। अमरीकी जनता जागृत थी। योरोपीय देशों के अंतर्गत व्यवहार में अमेरीका ने उलझना नहीं चाहिये, ऐसा वे सोचते थे। इस कारण विल्सन जब अमेरीका लौटे तब उनका स्वागत नहीं हुआ। उनके द्वारा कहा गया विचार अस्वीकार किया गया और अमरिकन काँग्रेस (अमरिकन पार्लियामेंट) ने प्रस्ताव पारित किया कि प्रेसिडेंट विल्सन ने जो लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना की है उससे हम सहयोग (Associate) नहीं करेंगे। प्रेसिडेंट विल्सन ने जो व्हर्सांय का समझौता किया है उसे हम स्वीकार नहीं करते। प्रेसिडेंट विल्सन यह आघात सह नहीं सके। अगले चुनाव में वे हार गये और पक्षाघात से उनकी मृत्यु हो गयी। जनता जाग्रत रहने से दुनिया के त्राता माने जाने वाले विल्सन को भी पक्षाघात होकर मृत्यु तक पहुँचना पड़ा था। विल्सन को संवैधानिक अधिकार तो था, परंतु नैतिक अधिकार नहीं था, यह जाग्रत जनता ने उन्हें दिखा दिया। आज जो लड़ाई शुरू हो गई है उसका स्वरूप हम समझ लें। तृतीय विश्वयुद्ध का एक हिस्सा भारत में चल रहा है। कुछ योरोपीय देशों में भी यह संघर्ष चल रहा है। यह षड्यंत्र है। राज्यकर्ताओं से सांठ-गांठ कर जनता को अंधेरे में रख कर समझौता हो रहा है। और जनता को उसका पता बाद में लगता है। दुनिया

के इतिहास में पहली बार फ्रान्स और योरोपीय कम्यूनिटी के १२ देशों के किसानों ने प्रदर्शन करते हुए अपने सरकार से मांग की कि किसानों के बारे में किये गये समझौते पर आपके द्वारा किये गये हस्ताक्षर वापस लो (Withdraw)। केनेडा में NAFTA पर जिन्होंने हस्ताक्षर किये थे, वह राजकर्ता दल अगले चुनाव में हार गया। उस दल को केवल दो सीटें मिली। चुनाव में सफल सरकार दल के प्रधानमंत्री ने अमेरिका के क्लिंटन को लिखा कि सुसंस्कृत शासन से अपेक्षित सातत्य को (Civilized Govt. की Continuity) हम मानते हैं, किन्तु जिस पर हस्ताक्षर हुआ है वह समझौता हमारे लिये असुविधाजनक रहने से उसके बारे में नये सिरे से विचार विमर्श हो। (We demand renegotiation on the agreement) यह घटना भी दुनिया के इतिहास में पहली ही है। मेक्सिको में तो किसानों ने शस्त्र धारण कर विद्रोह किया, जिसको दबाया गया।

इसलिये एक बार हस्ताक्षर हो जाने पर वह पत्थर की लकीर बन जाती है, ऐसा समझने का कारण नहीं है। यह लंबी लड़ाई है। लड़ाई अमेरिका से कहिये या पूंजीवाद से, परंतु संघर्ष लंबा है। शासकों के द्वारा भूमिका पहले से ही बांधी गई थी कि इसका कोई पर्याय नहीं है। १६ वर्ष पूर्व श्री. जे. डी. बिर्ला ने अपने लेख में कहा था कि For purpose of domestic market India is a world in itself भारत में Natural resources, talent, producers, consumers सब कुछ रहने के कारण यदि We are isolated from the rest of the world तो भी Manage कर सकेंगे।

जैसे अमेरिका का आक्रमण बढ़ता गया वैसे तृतीय विश्व के देशों में लोकजागृति और सतर्क वृत्ति (Awareness and realization) भी बढ़ती गई। उसका प्रतिकार किये जाने का विचार भी आरंभ हो चुका है। मलेशिया के महातीर महंमद की प्रेरणा से जो South Commission स्थापन हुआ जिसके अध्यक्ष तांझानिया के श्री न्येरेरे थे और सेक्रेटरी जनरल डा० मनमोहन सिंह थे। इन्होंने आर्थिक परिस्थिति का अध्ययन कर Challenge to the South नामक रिपोर्ट तैयार की जो अभी प्रकाशित हुई है। इस रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि गोरे देश सब को हड़पना चाहते हैं। इनको रोका नहीं गया तो हम बर्बाद हो जायेंगे। इसलिये गैर गोरे तृतीय विश्व के देशों ने आपस में सहयोग बढ़ाना चाहिये। यह रिपोर्ट डॉ० मनमोहन सिंह के मार्गदर्शन में

तैयार हुई थी। आश्चर्य की बात यह है कि अर्थ मंत्री बनने के पश्चात वे इस रिपोर्ट में जो कहा गया था वह सब भूल गये। South - South Cooperation! यह एक बडा शास्त्र हाथ में होते हुए भी केवल लाचारी के कारण वे अपनी रिपोर्ट की बातें भूल गये। केवल व्यक्तिगत या पारिवारीक लाचारी से यह गलत Agreement हो गया। इतना हम अवश्य कह सकते हैं।

प्रधानमंत्री को हस्ताक्षर करने का नैतिक अधिकार नहीं हैं। हस्ताक्षर करने पर भी वह जनता पर बंधनकारक नहीं है। यह सब होते हुए भी हस्ताक्षर हो जाने के पश्चात GATT समझोते पर अमल शुरू होगा। भारत में विदेशी पूंजी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आना आरंभ होगा। सैनिक शस्त्रों की लड़ाई में अपने देश का कुछ हिस्सा हम खोते हैं। अब होने वाले आर्थिक संघर्ष में अपनी एक कंपनी, एक अर्थोत्पादन करने वाला उद्योग भी यदि हम खोते हैं तो हमें भारत की जमीन का एक टुकड़ा खोने जैसा ही दुःख होगा। इस आर्थिक संघर्ष में सैनिकी संघर्ष से स्वरूप भिन्न होकर भी, मनोवैज्ञानिक और राजनीति की दृष्टि से वे समान ही द्वितीय महायुद्ध के पूर्व जर्मनी लड़ाई की तैयारी कर रहा था। इंग्लैंड में चेंबरलेन प्रधानमंत्री थे। चर्चिल सचेत होने की बार-बार सूचना देकर जनता से कहते थे कि हमें लड़ाई की तैयारी करनी चाहिये। परंतु चर्चिल War Manager है, अकारण भड़का रहे है, ऐसा कहते हुए चेंबरलेन कहते थे कि शांतता का समय है। इस विषय में एक श्रेष्ठ इतिहासकार ने लिखा है कि म्यूनिक समझोते पर हस्ताक्षर कर जब चेंबरलेन इंग्लैंड लौटे तो हजारों अंग्रेजों ने उनका स्वागत किया। डाऊनिंग स्ट्रीट पर उनके मकान में आने पर भी उनका भव्य स्वागत हुआ। उस समय उन्होंने अपने भाषण में कहा कि अब शांतता होगी, आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। उनके द्वारा कहा गया और इतिहास में लिखा हुआ उनका वाक्य है, “Now I ask you to go home and have quiet sleep” लोग प्रसन्न होकर चेंबरलेन की जयजयकार करते हुए अपने घर लौटे।

किन्तु महायुद्ध छिड़ गया। लोगों को पता चला कि सब Calculations गलत थे। War Manager चर्चिल कहता था वही बात सही थी। पश्चात १९४० में House of commons में सरकारी नीति की आलोचना की गई। लॉइड जॉर्ज ने ८ मई १९४० के अपने भाषण में कहा- सरकारी नीति पूर्णतया गलत थी। अब प्रधानमंत्री आह्वान कर

रहे हैं कि हमें राष्ट्र के लिये बड़ा त्याग करना चाहिये। सुयोग्य नेतृत्व आह्वान करे तो जनता त्याग के लिये तैयार हैं। यदि त्याग की ही आवश्यकता है तो प्रधानमंत्री जी ने अपने पद का त्याग करना यही आज की परिस्थिति में देश के लिये उपयुक्त सिद्ध होगा। इस पर प्रधानमंत्री ने त्याग पत्र दे दिया। आगे चलकर राष्ट्रीय सरकार की (National Govt.) वहाँ स्थापना हो गयी थी। बाकी का इतिहास हम जानते हैं।

हिटलर की तैयारी थी। अंग्रेज तैयार नहीं थे। इस कारण Reverses आये, Set back मिलने लगे। इंग्लैंड सागरी सम्राट होते हुये भी डंकर्क में पराभूत हुआ। चर्चिल ने अपने भाषण में स्पष्ट कहा था कि युद्ध लंबा है, अनेक वर्ष तक लड़ना पड़ेगा। हमें खून, पसीना और आंसू ही बहाने पडेंगे (Blood, Sweat & Tears)।

लंबी देर तक त्याग करते रहने का आह्वान चर्चिल करते रहे। जहाँ लडाई में पीछे हटना पड़ता था तो उसे Operation Salvage या Successful retreat कहते थे। डंकर्क से अधिक सैनिक और शस्त्रास्त्र कुशलता से इंग्लैंड लाने में सफल हुये, इसलिये वहाँ के एडमिरल का सम्मान किया गया। पीछे हटते समय कम से कम हानि हो यही स्पष्ट करने के लिये Successful retreat शब्द प्रयोग प्रचालित किया गया।

इसी समय देश की मानसिकता युद्ध के लिये तैयार करना और युद्ध साहित्य निर्मिती करना इन दोनों मोर्चों पर चर्चिल की प्रेरणा से इंग्लैंड का प्रयास चलता रहा। वे जनता से कहते थे कि हम लंबी देर तक लड़ते रहेंगे, प्रतिकार करते ही रहेंगे। उधर हिटलर का प्रचार था कि इंग्लैंड बनियों का देश है। (England is a Nation of Shopkeepers) ये अधिक देर तक लड़ नहीं सकेंगे। समय बीतता गया। इंग्लैंड का प्रतिकार उनका साहस और Morale बढ़ता गया, अधिक प्रखर होता गया और जर्मन लोगों का धीरज कम होने लगा। चर्चिल ने अंग्रेजी जनता से पहले से ही कहा था कि हम तैयारी करेंगे और आखरी जीत हमारी होगी। धीरे-धीरे वे सफलता पूर्वक प्रतिकार करने की स्थिति में आ गये। यह धीरज की, पेशन्स की लड़ाई थी। प्रारंभ में सिद्धता न रहते हुए भी अंत में जीत अंग्रेजों की हुई। इस War of nerves में इंग्लैंड यशस्वी हुआ।

अमेरिका के द्वारा प्रारंभ की गई भारत की आर्थिक लड़ाई बहुत बड़ी है। अमेरिका की दादागिरी अधिक समय तक नहीं चल सकेगी। आज अमेरिका की ताकत बड़ी दीख रही है, परंतु वह कम हो रही है। १९६० से उनकी अर्थव्यवस्था टूट रही है। For their own

survival अपनी अर्थव्यवस्था टिकाकर रखने के लिये दुनिया के शोषण का वे विचार कर रहे हैं। हम विश्वास के साथ कहना चाहते हैं कि सन् २०१० तक अमेरिका का आर्थिक क्षेत्र में आज का क्रमांक एक का स्थान भी टूट जायेगा। पूंजीवाद व्यवस्था भी नष्ट होगी। अमेरिका के चिंतक भी यही बात कहते हैं। भारत के लिये यह War of nerves है।

मलेशिया छोटासा देश है, परंतु उसका प्रतिनिधि अमेरिका को "तुम्हारी यह Bullying tactics हम नहीं चलने देंगे" कहने का साहस कर सकता है। छोटासा देश कोरिया अमेरिका से कहता है "हम जिस क्षेत्र में चाहते हैं उसी क्षेत्र में Investment करो।" छोटा-सा उत्तर कोरिया प्रक्षेपणास्त्रों के विषय में अमरिकी दादागिरी मानने को तैयार नहीं है। किन्तु लड़ाई के लिये सिद्ध है। छोटा-सा कोरिया अमेरीका से लड़ाई करने की बात हिम्मत से करता है, यह हम सोच भी नहीं सकते। जापान कई साल तक अमेरिका के प्रभाव में रहा। वह आज अमेरीका से As a matter of strategy सीधा कहता है कि समझौता आपकी नहीं, हमारी शर्तों पर होगा। चीन GATT सदस्य न होते हुये भी उसको Most favoured Nation का दर्जा था। Human Rights के बारे में अमेरिका के कहने पर चीन ने कहा कि हमारे अंतर्गत मामले में आप हस्तक्षेप कर रहे हैं। हमारी स्वाधीनता पर यह आक्रमण है। अमेरिका के यह कहने पर कि यदि आप नहीं मानते तो आपका most favoured Nation का दर्जा समाप्त करेंगे, चीन ने कहा कि जरूर समाप्त कीजिये। "American Market will be Closed to Chinese goods." ऐसा अमेरीका के कहने पर चीन ने उत्तर दिया- "chinese market will be closed for your American Goods." धीरे-धीरे अमेरिका के दादागिरी के विरोध में बोलने की हिम्मत करने वालों की संख्या बढ़ रही है। South-South Co-operation की संकल्पना में, बड़ा देश होने के नाते हिन्दुस्थान की ओर नेतृत्व के लिये बाकी विकसनशील देश देख रहे थे। एप्रिल १९८९ में भारत के प्रतिनिधी ने विकसनशील देशों का विश्वासघात करते हुए समर्पण कर दिया। परंतु आज भी तृतीय विश्व के देश हिन्दुस्थान की ओर आशा से देख रहे हैं। आज धीरज और पेशन्स हमारे लिये महत्व का है। पेशन्स यह अमेरिका का यानि अमेरिका के राज्यकर्ता और वहाँ के Monopoly Capitalist लोगों का Weak point है। वहाँ के निग्रो, युरो अमेरिकन, मेक्सिकन्स, रेड इंडियन्स और

गरीब एंग्लो सेक्सन का भी ये राज्यकर्ता शोषण कर रहे हैं। विएतनाम जैसे छोटे से नवस्वतंत्र देशों में अपना प्रभाव निर्माण करने हेतु अमेरिका ने शस्त्रास्त्र और बड़ी सेना भेजी थी। सेना को कहा गया था कि देश छोटा-सा है, अपना कार्य सफल कर दो साल में लौट आयेंगे। विएतनाम ने प्रतिकार करने का सोचा और आठ वर्ष तक प्रतिकार चलता रहा। पेशन्स न रहने से अमेरीका के लोगों ने, अपने बच्चों को विएतनाम में क्यों मरवा रहे हो ऐसा पूछा। दसवें साल में विजय की आशा छोड़कर शस्त्रास्त्र से सुसज्ज अमेरिकन सेना को वापस आना पड़ा।

हिन्दुस्थान के इतिहास में भी पेशन्स की लड़ाई का हमें अनुभव है। बड़ी सेना लेकर औरंगजेब महाराष्ट्र में आये थे। मराठों की खस्ता हालत थी। सन् १६७० से राजा भी नहीं था। राजाराम इधर-उधर प्रवास करते रहे थे। राजा, सेना, सेनापति और खजाना कुछ भी न होते हुये भी छापामार लड़ाई चल रही थी। औरंगजेब के पास सुसज्ज सेना, खजाना, साधन, संपन्नता सब कुछ रहते हुए भी १८ साल तक लड़ाई चलती रही। अंत में हिन्दवी स्वराज की कब्र रचने की प्रतिज्ञा से दख्खन में आये औरंगजेब की ही दख्खन में कब्र बनी। पेशन्स यह हिन्दुओं का Strongest Point है। War of nerves में किसका धीरज ज्यादा टिकता है, इसी का महत्व रहता है। पेशन्स में अमेरिका दुर्बल है और हिन्दुओं में अनेक दुर्गुण और दोष होकर भी दुनिया ने यह मान लिया है कि Patience is the strongest point of HINDUS.

इस आर्थिक संघर्ष में रणनीति के विषय में हम सोचेंगे परंतु इस संघर्ष में हम विजयी होंगे यह विश्वास आज के पर्व पर हम हृदय में धारण करें। लड़ाई लंबी रहने से त्याग की तैयारी करनी पड़ेगी। साधन संपन्न आसुरी शक्ति पर दैवी शक्ती ने विजय प्राप्त की थी इस आकांक्षा को हदय में लगाने वाले शालिवाहन के विजय पर्व को हम मना रहे हैं। डॉक्टरजी ने हमारे ह्रदय में जगाया हुआ विजय का विश्वास, लड़ाई की लंबी अवधि और सफलता हेतु त्याग की तैयारी का दृढ़ निश्चय हम आज के सुअवसर पर करें।

प्रकाशक
भारतीय विचार साधना
महाल, नागपुर